तिग्मांशु धूलिया निर्देशित फिल्मों में सामाजिक यथार्थ: एक विश्लेषण

एम. फिल.(नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग)उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र: 2013-14

शोध-निर्देशक

प्रो. सुरेश शर्मा

विभागाध्यक्ष

प्रस्तुतकर्ता

विजय लाल कन्नौजिया

पंजीयन सं.20013/07/204/010

नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग

सृजन विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा-442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

➢ भूमिका पृष्ठ संख्या

अध्याय 1- तिग्मांशु धूलिया का जीवन परिचय 01-9

1.1 व्यक्तित्व

1.2 कृतित्व

अध्याय 2- हिन्दी सिनेमा में सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण 10-19

अध्याय 3- चयनित फिल्मों मे सामाजिक और राजनैतिक यथार्थ 20-98

3.1 हासिल

3.2 चरस

3.3 शागिर्द

3.4 साहब बीवी और गैंगस्टर

3.5 साहब बीवी और गैंगस्टर रिटर्न

3.6 पान सिंह तोमर

उपसंहार 99-101

संदर्भ ग्रंथ सूची 102

भूमिका

समाज शब्द का नाम आते ही ऐसी व्यवस्था के बारे में हमारा ध्यान जाता है जिसमें व्यक्तियों की सामुदायिक जीवन शैली रहन-सहन सभ्यता, संस्कृति, सुख-दुख, परेशानी, समस्याअंतरनिहित होती है और यें ही चीजें किसी भी समाज का यथार्थ होती है जो भी कलाकार, फिल्मकार, समाजचेता अपने समाज की जड़ो से जुड़ा हुआ होता है उसकी समस्याओं से हुआ होता है वह समाज के कठोर सच को न केवल महसूस करता है बल्कि जब वह किसी भी काल के माध्यम से कुछ भी अभिव्यक्ति करता है तो अपने इस सामाजिक यथार्थ को अपने उस कला में भरपूर जगह देता है और यही उस कलाकार, फिल्मकार, समाजचेता की अपने समाज के प्रति सबसे बड़ी निष्ठा होती है इनका ध्येय समाज की समस्याओं को उठाने तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि वह मौजूदा समाज से अपने में बदलाव कर हल ढूढ़ने को भी प्रेषित करते हैं।

कला के अन्य शसक्त माध्यमों की तरह सिनेमा भी एक सशक्त माध्यम है जिसकी पहुंच समाज के हर तबके में है और हर तबके से इसका जुड़ाव है सिनेमा में जाति, धर्म, लिंग के आधार पर कोई विभाजन नहीं है वह हर उस व्यक्ति के लिए है। जिसकी आवाज कमजोर पड़ रही है। उसकी समस्याएं अनसुनी हो रही है। जिन्हें हासिए पर ढ़केला जा रहा है उनको शोंषण दमन किया जा रहा है सिनेमा उन्हीं के लिए सशक्त प्रहरी बनकर आया है।

जहां तक बात कि जाए हिंदी सिनेमा की तो शुरूआती दशक में सामाजिक यथार्थ को लेकर के कई महत्वपूर्ण फिल्में आयी। फिल्मों में पारसी थियेटर के प्रभाव ने समाज को पीछे ढकेल दिया। सिनेमा मात्र मनोरंजन और हास्य ठहाका बनकर रह गया। 60-70 के दशक में सामाजिक समस्याओं और मुद्दों को उठाने वाले निर्देशकों की एक सशक्त खेप सिनेमा में आयी जिसने सिनेमा को फिर से जिंदा कर दिया। इन निर्देशकों में श्याम बेनेगल, प्रकाश झा, गोविंद नेहलानी, विमल राय, साई पराजये आदि प्रमुख हैं।

फिर 80-90 के दशक में डिस्कों थेक एवं पाश्चात् सभ्यता के प्रभाव में हिंदी सिनेमा रंगने लगा जिसका यह नतीजा हुआ सिनेमा अपनी जड़ो से कट गया समाज उससे कहीं ज्यादा पीछे छूट गया। इक्कीसवीं शताब्दी कई मायनों में कई बदलाव लेकर आयी लिहाजा सिनेमा में भी बदलाव हुआा फिर एक बार ग्रामीण परिवेश छोटे शहर एवं कस्बों से आकर सिनेमा की बारीकियां सीखे हुए कुछ निर्देशकों ने सिनेमा को एक बार फिर से समाज से जोड़ा। अपने आस-पास की समस्याओं और विद्रुताओं को लेकर के

सिनेमा बनाया और जोरदार बनाया इतना कि सिनेमा के दिग्गजों को इनकी प्रतिभा का लोहा मानना ही पड़ा। इन प्रमुख निर्देशकों में अनुराग कश्यप, दिवाकर बनर्जी, विक्रमादित्त मोटवानी, इम्तीयाज अली, यल आनन्द राय, अभिशेक कपूर, सुजॉय घोष एवं तिग्मांशु धूलिया का नाम प्रमुखता से उभर कर आता है।

(तिग्मांशु धूलिया ने फिल्मी जगत में अपना पर्दापण सन् 2003 में इलाहाबाद की छात्र राजनीति, छात्रों के भटकाओं, गुण्डागर्दी, शासन और सत्ता से अनैतिक गठजोड़ एवं हत्या जैसे मुद्दों की पृष्ट भूमि में एक सुखद एवं शसक्तफिल्म बनायी।

'ड्रग्स' जैसे गैर कानून धंधों के राष्ट्रीय एवं अतरराष्ट्रीय खरीद फरोख्त तथा उसमें शामिल नेतामंत्री, पुलिस, माफिया, अतंकी सबके गठगोड़ की दास्ता वयां करती 2004 में आयी फिल्म 'चरस' ने समाज के एक अलग ही सच को दिखाया।

सन् 2011 में आयी फिल्म 'शार्गिद' नेता, मंत्री, पुलिस, माफिया, कारोबारी के आपसी गठगोड़ की ऐसी कहानी है जिसमें हर कोई अपने लाभ और स्वार्थ के लिए कानून का गैरकानूनी ढ़ंग से इस्तेमाल करता है और इस व्यवस्था को बौना बनाने की फिराक में है।

दो भागों में आयी 'साहब बीवी और गैंगस्टर' फिल्म आप्रसांगिक हो चुके एक राजा के द्वारा अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए एवं जनतंत्र में भी अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए एवं जनतंत्र में भी अपनी राजशाही की धौंस को बनाए रखने के खातिर छल-छद्म ढ़ंग से छिनैती, हत्या, खरीद परोख्त, और गुण्डागर्दी जैसे कुकृत करवाने जैसी चीजों को पृष्ट भूमि में रखकर ये कहानी बुनी गयी है। सन् 2012 में आयी तिग्मांशु की बहुप्रासंगिकता फिल्म 'पान सिंह तोमर' नामक एथलिट का शासन, व्यवस्था और समाज प्रताडित होकर बिहड़ का बागी बनने की गाथा है।

और इस तरह से हम देखते है कि तिग्मांशु की सभी फिल्में सामाजिक उद्येश्य मुद्दा एवं यथार्थ को लेकर चली है जिसमें की राजनीति, धर्म, शिक्षा, शासन सभी की उपस्थिति देखी जा सकती है।

यह लघु शेध-प्रबंध तीन अध्यायों के विभक्त है। प्रथम अध्याय में तिग्मांशु धूलिया का जीवन परिचय दिया गया है जिसके अंतर्गत उनके व्यक्तित्व एवं कृत्तिव पर चर्चा की गयी है।

द्वितीय अध्याय मे हिन्दी सिनेमा मे सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण के बारे मे चर्चा की गयी है

तृतीय अध्याय में तिग्मांशु धूलिया की फिल्मों के सामाजिक यथार्थ के स्वरूप पर चर्चा की गयी है। जिसके अंतरगत उसकी फिल्म हासिल, चरस, शार्गिद, साहेब बीवी और गैंगस्टर, साहेब बीवी गैंगेस्टर रिटर्न, पान सिंह तोमर पर चर्चा करते हुए तथ्य परक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

यह लघु शोध प्रबंध तिग्मांशु धुलियाकी फिल्मों मेंसामाजिक यथार्थ इन दोनों के अध्ययन एवं विश्लेषण से इसे व्यापक फलक मिलता है और इस शोध प्रबंध में ऐतिहाससिक, वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रक्रियाका एवं व्यक्ति अध्ययन पद्धति जैसी शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

इस शोध प्रबंध को इस रूप में आ जाने में मेरे शोध निर्देशक प्रो. सुरेश शर्मा का उचित मार्गदर्शन मिला जिनके प्रति मैं अपने हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, विभाग की सहायक प्रो. डॉ. विधू खरे दास के प्रति भी हृदय से आभार जिन्होंने समय-समय पर उचित सुझाव दिया एवं मैं अपने मित्रों, अमरेन्द्र, भगवत पटेल, एवं अन्य मित्रगण के प्रति मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से यह लघु शोध-प्रबंध संपन्नहुआ।

उपसंहार

शुरू से ही समाज ऐसी व्यवस्था रही है जिसके परिधि में रहकर ही व्यक्तित्व का विकास होता रहा है समाज में व्यक्ति को उनके नियम कायदे सिखा कर उसमें मूल्य डाले है। उसी का नतीजा है मनुष्य, मानवीयता, सृजनात्मकता, जैसी पहलुओं से परचित हो पाया है जो ज्ञान व्याक्ति को मोटी-मोटी किताबों के अध्ययन के उपरांत भी नहीं प्राप्त होता उसे समाज, मनुष्य को चुटकियों में अनुभूत करा देता है। इस समाज का अपना कठोर यथार्थ भी होता है। जिससे बचकर कोई भी जागरूक समाजचेता नहीं रह पाता क्योंकि समाज में विकास एवं गतिशीलताकीधाराके विपरीत उल्टी दिशा में जड़ मान्यताएं, रूढियां, संकीर्णताएं बहती रहती है जो समाज को पीछे की तरफ खींचती है दूसरी तरफ समाज की अपनी कुछ समस्याए होती है। जिनसेव्यक्ति, समाज, परिवार, देश संघर्ष करता रहता है। और व्यक्ति की इस संघर्श गाथा को विभिन्न साहित्यकार, कलाकार, फिल्माकारअपनी कलाओं के माध्यम से अभिव्याक्ति करते रहे है जिससे की आने वाले पीढ़ी को सच और यथार्थ का ज्ञान हो सके इन्हीं कहा माध्यमों में फिल्म भी एक सशक्त कला माध्यम है विभिन्न फ़िल्मकारों ने अपनी फिल्मों के माध्यम से समाज के कई अनछुए मुद्दों अनकहे पहलुओं को फिल्म का विषय बनाया और बड़ी सशक्तता से समाज के सामने रखा समाज का चेहरा सिनेमा के आईने से समाज को ही दिखाया। जिस यथार्थ चेहरे को समाज देखने से बचता रहा है। सिनेमा ने समाज के बहुत सारे बदलाओं में अपनी निर्णायक भूमिका अदा की है।

हिंदी सिनेमा को समाज के यथार्थ से जोड़ने वाले दिग्गज निर्देशकों में विमल राय, सत्यजीत राय, रिषीकेष मुखर्जी, तपन सिन्हा, मृणाल सेन, श्याम बेनेगल, गोविंद नेहलानी प्रकाश झा, साई परांजपे, अपर्णा सेन, ऋतुपर्णो घोस, अनुराग बासू, अनुराग कश्यप, सुजॉय घोष, आनंद राय, राकेश ओम, प्रकाश मेहरा, अशुतोष गोवडिकर, विदू विनोदचोपड़ा, राजकुमार हिरानी, दिवाकर बनर्जी, इम्तीयाज अली एवं तिग्मांशु धूलिया जैसे लोगो का नाम आता है। हमने शोध कार्य के दौरान तिग्मांशु धूलिया के फिल्मों के समाजिक यथार्थ के स्वरूप के बारे में गहराई से अध्ययन किया। जिसके फल स्वरूप हमे यह पता चला कि तिग्मांशु की समाज पर गहरी पकड़ है ये समाज के नब्ज को पहचानते है। इसलिए वे जैसी छात्र राजनीति पर आधारित फिल्म बना सके जिसमें उन्होंने छात्रों की आपसी दुश्मनी नेताओं, मंत्रियों का उनके उपर हाथ होना एवं उनको बढ़ावा देने जैसी चीजें एवं जबरन इसी के साथ शादी विवाह जैसी चीजों को प्रस्तुत करना उस निर्देशक का समाज के प्रति गहरी जांचपड़ताल का ही परिणाम है अन्यथा इतने बारीक-बारीक विंदुओं को कोई कहां पकड़ सकता है।

फिल्म 'चरस'में जिस तरह से उन्होंने चरस जैसे गैर कानूनी ड्रग्स को माफिया, पुलिस, मंत्री, दलाल, आदमी की बीच की कड़ी बनाते हुए दिखाया है वह उनके उस पूरे परिवेश पर खोज बीन एवं निरंतर ध्यान बनाए रखने का ही परिणाम है। जिसे दर्शकों हेतु अच्छी तरह दिखा सके हैं।

फिल्म शागिर्द में उन्होंने कानून व्यवस्था के अंदर कानून की नुमाईन्दगी करने वाले पुलिस, नेता, मंत्री और कानून को तोड़ने वाले माफिया कारोबारी ड्रग्स एवं औजार सप्लाई करने वाली लोगों के बीच जिस तरह का गठजोड़ दिखाया है वह पूरे शासन-प्रशासन को कटघरे में खड़ा करता है और इसे व्यवस्था के अंदर घुसे दीमकों से समाज चेताओं को आगाह करा देना चाहता है। इतने जटिल और राहास्यात्मक विषय का कहना किसी मामूली निर्देशक के बस की बात नहीं है।

फिल्म साहब बीवी और गैंगेस्टर के दोनों भागों में राजाओं के द्वारा कुत्सित, कृत्य, छल-छद्म, छिनैती, लूट-पाट, हत्या जैसी हरकते करने का कार्य खुद को सत्ता में बनाए रखने के लिए अपनी मृत प्राय हो चुकी सामंतवादी व्यवस्था को गरीबों, वंचितों के खून से संजीवनी बना कर अपनी व्यवस्था जिंदा रखे रहना चाहते हैं। उसको बड़े शसक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

फिल्म 'पान सिंह तोमर' में तिग्मांशु धूलिया ने समाज के एक अलग ही सच को पकड़ा है। जिसमें की देश को कई बार राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पदक जीत कर उसकी शान बढ़ाने वाला एथलीट किस तरजह से समाज के क्षेत्रीय गुण्ड़ागर्दी और पुलिस प्रशासन के उपेक्षा का शिकार होता है उसकी फसल काट ली जाती है घर बार नष्टकर दिया जाता है उसकी मां तक को मार दिया जाता है फल स्वरूप वह निर्दोष बागी बनने पर मजबूर होता है यह फिल्म तिग्मांशु के निर्देशकीय पारी की सबसे कलात्मक एवं यथार्थ फिल्म है। इसने फिल्म जगत में तिग्मांश को स्थापित कर दिया है। इस तहर से तिग्मांशु ने अपनी यथार्थवादी फिल्मों के माध्यम से समाज के सच को जनता के सामने रखा है। हम आशा करते है कि आने वाले भविष्य में तिग्मांशु सामाजिक यथार्थ को गहराई से उठाती हुए और भी ज्यादा बेहतरीन फिल्म दे एवं समाज में अपनी शसक्त उपस्थिति को दर्ज कराते रहें यही होगी उनकी समाज के प्रति सच्ची निष्ठा समाज से सच्चा लगाव जिसका की ये समाज हमेशा ऋणी रहेगा।